International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-01-2026, Accepted: 19-02-2026, Published: 06-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 208-209

# स्वतंत्रता–पूर्व और स्वतंत्रता–पश्चात हिंदी कहानी में नारी एवं पुरुष की बदलती स्थिति: एक तुलनात्मक अध्ययन

**एम. डी. इम्तियाज**
भाषा पंडित (हिंदी), ZPHS, Kothapally, Telangana, India

**सारांश**
हिंदी कहानी साहित्य भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक परिवर्तनों का सशक्त दर्पण रहा है। स्वतंत्रता–पूर्व हिंदी कहानी में सामाजिक आदर्शवाद, नैतिक मूल्य एवं पारिवारिक मर्यादा प्रमुख रहे, जबकि स्वतंत्रता–पश्चात कहानी साहित्य में व्यक्ति–चेतना, मनोवैज्ञानिक यथार्थ और स्त्री–पुरुष संबंधों की जटिलता उभरकर सामने आई। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य दोनों कालखंडों की प्रतिनिधि कहानियों के आधार पर नारी एवं पुरुष पात्रों की बदलती सामाजिक, वैचारिक तथा मनोवैज्ञानिक स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन यह स्थापित करता है कि हिंदी कहानी साहित्य में लैंगिक भूमिकाएँ स्थिर न होकर सामाजिक परिवर्तन के साथ निरंतर पुनर्निर्मित होती रही हैं। [1, 6, 7]

**मूल शब्द:** हिंदी कहानी, नारी विमर्श, नई कहानी आंदोलन, लैंगिक अध्ययन, मनोवैज्ञानिक यथार्थ, सामाजिक परिवर्तन

## प्रस्तावना
हिंदी कहानी साहित्य सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम रहा है। स्वतंत्रता–पूर्व कहानियाँ आदर्शवादी दृष्टिकोण, कर्तव्यबोध एवं नैतिक मूल्यों से संचालित थीं, जबकि स्वतंत्रता–पश्चात कहानी में व्यक्ति की आंतरिक चेतना, अस्तित्वगत प्रश्न और संबंधों की मनोवैज्ञानिक जटिलता को केंद्र में स्थान मिला। [6, 7]

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के प्रसार, शहरीकरण और आधुनिक विचारधाराओं ने पारिवारिक एवं लैंगिक संबंधों को प्रभावित किया, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव कहानी साहित्य में स्त्री और पुरुष पात्रों की प्रस्तुति पर देखा जा सकता है। [8, 13]

## साहित्य समीक्षा
रामचन्द्र शुक्ल ने साहित्य को युगचेतना और सामाजिक विकास से जोड़ते हुए उसकी ऐतिहासिक भूमिका को रेखांकित किया है। [1] नामवर सिंह के अनुसार नई कहानी आंदोलन आधुनिक व्यक्ति की मानसिक जटिलताओं और सामाजिक संक्रमण का साहित्यिक रूप है। [6, 9] रामविलास शर्मा तथा मैनेजर पांडेय ने साहित्य और समाज के अंतर्संबंध को स्पष्ट करते हुए सामाजिक परिवर्तन की साहित्यिक अभिव्यक्ति पर बल दिया है। [7, 8]

नारी विमर्श के संदर्भ में ममता जोशी ने हिंदी साहित्य में स्त्री–अस्मिता, पहचान और स्वतंत्रता के प्रश्नों को केंद्र में रखा है। [12], तथापि, स्वतंत्रता–पूर्व और स्वतंत्रता–पश्चात हिंदी कहानी में स्त्री एवं पुरुष दोनों की बदलती स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। यही प्रस्तुत शोध का प्रमुख शोध–क्षेत्र है।

## शोध समस्या एवं (Research Gap)
पूर्ववर्ती अध्ययनों में नारी विमर्श या नई कहानी आंदोलन पर पृथक रूप से चर्चा मिलती है, किंतु दोनों कालखंडों में स्त्री एवं पुरुष पात्रों की तुलनात्मक स्थिति का समग्र विश्लेषण सीमित है। प्रस्तुत शोध इसी कमी को पूरा करते हुए लैंगिक भूमिकाओं के ऐतिहासिक परिवर्तन को विश्लेषित करता है।

## अध्ययन के उद्देश्य
- स्वतंत्रता–पूर्व हिंदी कहानियों में नारी एवं पुरुष की स्थिति का अध्ययन करना।
- स्वतंत्रता–पश्चात कहानियों में पात्रों की बदलती भूमिकाओं का विश्लेषण करना।
- स्त्री–पुरुष संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
- साहित्य एवं सामाजिक परिवर्तन के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करना। [7, 8]

## शोध प्रश्न
- क्या स्वतंत्रता–पूर्व कहानियों में नारी की भूमिका आदर्शवादी और सीमित थी?
- स्वतंत्रता–पश्चात कहानियों में नारी पात्रों की प्रस्तुति में क्या परिवर्तन आए?
- पुरुष पात्रों की मानसिकता एवं सामाजिक भूमिका में क्या बदलाव दिखाई देते हैं?
- नई कहानी आंदोलन ने लैंगिक दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित किया? [6, 9]

## शोध पद्धति
यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative), तुलनात्मक एवं पाठ–विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। प्रेमचंद, मन्नू भंडारी, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कृष्णा सोबती तथा निर्मल वर्मा की प्रतिनिधि कहानियों का विश्लेषण कर स्त्री एवं पुरुष पात्रों की सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक स्थितियों का अध्ययन किया गया है। [2, 3, 4, 10]

## सैद्धांतिक आधार
### 1. नारीवादी आलोचना दृष्टि
साहित्य में स्त्री की पहचान, अस्मिता और स्वतंत्रता के प्रश्नों का विश्लेषण। [12]

### 2. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण
साहित्य को सामाजिक संरचना और परिवर्तन का दर्पण मानकर अध्ययन। [7, 8]

### 3. मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद
नई कहानी आंदोलन में पात्रों की आंतरिक चेतना एवं संबंधों की जटिलता का विश्लेषण। [6, 11]

### स्वतंत्रता–पूर्व कहानी में नारी और पुरुष

प्रेमचंद की कहानियों में नारी त्याग, सहनशीलता और पारिवारिक मर्यादा की प्रतीक है, जबकि पुरुष निर्णयकर्ता एवं सामाजिक अधिकार का प्रतिनिधि है। [2] यह प्रस्तुति तत्कालीन सामाजिक संरचना और पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को प्रतिबिंबित करती है। [1, 2]

### नई कहानी आंदोलन और परिवर्तन

नई कहानी आंदोलन ने आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्थापित किया। व्यक्ति का अकेलापन, मानसिक संघर्ष और संबंधों की जटिलता इस आंदोलन की विशेषताएँ हैं। [6, 9] मोहन राकेश और राजेन्द्र यादव की कहानियाँ आधुनिक जीवन की बेचैनी और संबंधों के तनाव को अभिव्यक्त करती हैं। [4, 10]

### स्वतंत्रता–पश्चात कहानी में नारी

स्वतंत्रता–पश्चात कहानी में नारी पात्र आत्मचेतना, स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय की आकांक्षा के साथ उभरती है। मन्नू भंडारी और कृष्णा सोबती की कहानियों में स्त्री का आत्मबोध और सामाजिक सीमाओं से संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। [3, 5, 12]

### स्वतंत्रता–पश्चात कहानी में पुरुष

आधुनिक हिंदी कहानी में पुरुष पात्र मानसिक द्वंद्व, असुरक्षा और भावनात्मक जटिलताओं से गुजरते हैं। पारंपरिक अधिकारपूर्ण छवि के स्थान पर संवेदनशील एवं आत्मसंघर्षशील पुरुष की छवि उभरती है। [4, 11]

### तुलनात्मक विश्लेषण

| आधार | स्वतंत्रता–पूर्व | स्वतंत्रता–पश्चात |
|---|---|---|
| नारी की भूमिका | त्याग, मर्यादा | आत्मचेतना, स्वतंत्रता |
| पुरुष की भूमिका | अधिकारपूर्ण | मानसिक संघर्ष |
| संबंध | कर्तव्य आधारित | संवाद आधारित |
| दृष्टिकोण | आदर्शवाद | यथार्थवाद |

### चर्चा

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा और आधुनिक चेतना ने हिंदी कहानी साहित्य में लैंगिक संबंधों की संरचना को पुनर्परिभाषित किया। नई कहानी आंदोलन के बाद संबंधों का भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण हो गया। नारी पात्र जहाँ आत्मनिर्णय की ओर अग्रसर होती है, वहीं पुरुष पात्र भी संवेदनशील और आत्मविश्लेषी रूप में सामने आता है।

### निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध यह स्थापित करता है कि हिंदी कहानी साहित्य में नारी एवं पुरुष की भूमिकाएँ समयानुसार परिवर्तित होती रही हैं। स्वतंत्रता–पूर्व कहानी में जहाँ नारी त्याग और पुरुष अधिकार का प्रतीक था, वहीं स्वतंत्रता–पश्चात कहानी में नारी स्वतंत्र व्यक्तित्व तथा पुरुष मनोवैज्ञानिक जटिलताओं से युक्त संवेदनशील चरित्र के रूप में उभरता है। यह अध्ययन हिंदी कहानी साहित्य में लैंगिक संबंधों की ऐतिहासिक यात्रा को समझने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है तथा भविष्य के नारीवादी एवं समाजशास्त्रीय अध्ययनों के लिए आधार निर्मित करता है। [1, 3, 4]

### संदर्भ सूची


1. शुक्ल, रामचन्द्र — हिंदी साहित्य का इतिहास
2. प्रेमचंद — मानसरोवर
3. भंडारी, मन्नू — श्रेष्ठ कहानियाँ
4. राकेश, मोहन — मोहन राकेश की श्रेष्ठ कहानियाँ
5. सोबती, कृष्णा — प्रतिनिधि कहानियाँ
6. सिंह, नामवर — नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति
7. शर्मा, रामविलास — साहित्य और समाज
8. पांडेय, मैनेजर — साहित्य के सामाजिक सरोकार
9. सिंह, नामवर — कहानी: नई कहानी
10. यादव, राजेन्द्र — हिंदी कहानी का विकास
11. वर्मा, निर्मल — आधुनिक हिंदी कहानी
12. जोशी, ममता — नारी विमर्श और हिंदी साहित्य
13. तिवारी, रमेश — साहित्य और सामाजिक परिवर्तन